जो भी कहूँगी सच कहूँगी, सच के सिवा कुछ नहीं कहूँगी.....

-संगीता राय

हम तो कह रहे कि मास्टरों के लिए एक अलग से संविधान बनाया जाए कि उनको क्लास में क्या बोलना है और क्या नहीं। अरे भईया, तुमको सलेबस मिला है पढ़ाने को, पढ़ाओ और जाओ। इतना ज्ञान बघारने की क्या ज़रूरत है। कुछ विषयों पर प्रतिबंध लगा दिया जाए कि इस विषय पर बात ही नहीं करनी है। जैसे सरकारी रेडियो में कुछ गाने बैन हैं, ठीक वैसे ही। अब बिचारे मास्टर की जितनी बुद्धि रहेगी उतनी ही तो बात करेगा ना। बड़े फ़लक पर मास्टर न देख पाते हैं न सोच पाते हैं। अरे "गुरूर ब्रह्मा गुरूर विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा" कहने से ये मास्टर ब्रह्मा विष्णु महेश थोड़े न हो जाएँगे। मतलब इज़्ज़त की चार लाइन क्या बोल दी, ये भी सर पे चढ़ जाते हैं। सारे मास्टर ख़ुद को चाणक्य का चाचा समझने लगते हैं। अरे हाँ हाँ, हम भी मास्टर है इसलिए मास्टरों को ख़ूब समझते हैं। ख़ैर....अब ऊ बिचारा मास्टर बोल दिया कि पढ़े- लिखे को वोट दो तो उसको नौकरी से निकाल दिया। अब देखो.... ग़लती तो उसने की हैं। इस आधार पर तो भईया हम ढूंढ़ते ही रह जाएँगे कि किसे वोट दे.....और वोट व्यर्थ थोड़े न करना है। रही बात डिग्री की तो वो तो बन ही जाती है। हम तो निवेदन करेंगे कि उस बिचारे की नौकरी बहाल कर दें। हमारी बिरादरी का आदमी है। इंसान से ग़लती हो जाती है। उस मास्टर से लिखवा लो कि आज के बाद से वो पढ़े-लिखे को वोट देने की बात नहीं करेगा। अब अपनी बिरादरी का पक्ष तो लेना ही पड़ेगा।

हाँ, तो हम कह रहे थे कि शिक्षा पाकर आदमी किसी काम का नहीं रह जाता। उसको बोलो पकौड़ा बेचो तो शर्माएगा, अंडा बेचो तो लजाएगा। अरे भईया, काम करने में कैसी लाज। Ph. D. कर ली MBA कर लिया तो हवा में चलोगे क्या। मुखिया जी चाय बेच के कहाँ से कहाँ पहुँच गए। बिना शिक्षा के जब देश संभाला जा सकता है तो बाक़ी सब काम भी किया जा सकता है। लता दी का वो गाना है न, उसे बैन कर देना चाहिए-

ये कहते हैं बाबा मेरे
और कहते हैं बिल्कुल ठीक
इज्जत के संग जीना है तो
मुन्ने लिखना पढ़ना सीख
जो है अनपढ़ गली
गली वो मांग करते भीख
अगर पढ़ो लिखोगे
बाबू राजा बनोगे।

अब कौन समझाए इन्हें कि आज अनपढ़ कहाँ से कहाँ पहुँच गए और पढ़े-लिखे भीख माँग रहे हैं। आज जाकर मेरी मोटी बुद्धि में ये बात समझ में आई कि सरकार शिक्षा का बजट कम काहे कर रही है। भईया, बड़ी दूरदृष्टि है..... उतना दूर का तो हम सोच भी नहीं सकते। शिक्षा का बजट कम इसलिए हो रहा है काहे कि हम लीडर पैदा करना चाहते हैं। अगर कोई पढ़ लिख गया तो उसको वोट नहीं मिलेगा। पढ़े लिखे को वोट देगा कौन......। शिक्षा का बजट कम रहेगा तो लोग कम पढ़ेंगे और कम पढ़ें तो लीडर बनेंगे। फिर हम लीडर सप्लाई करेंगे। लीडर का आयत-निर्यात। तब हम होंगे असल मायने में विश्वगुरु। लल्लन, सुन रहे हो न मेरी बात.....एक दिन सम्पूर्ण विश्व में हमारा राज होगा....हमारे नेता हर जगह होंगे। तब बनेगा आर्यावर्त। लल्लनवा कहने लगा- जानती हो, सबसे ख़राब नशा भांग का होता है। चौबीस घंटे असर रहता है। अभी तुमको कुछ कहना व्यर्थ है तो चलो गाना सुनाते हैं-

टाई लगाके माना बन गए जनाब हीरो।
रहे पढ़ाई और लिखाई में तो ज़ीरो-ज़ीरो।।